भालू चला मछली पकड़ने

IN-LLP-16-0015_Text_BearGoesFishing.indd 1 6/16/23 23:24

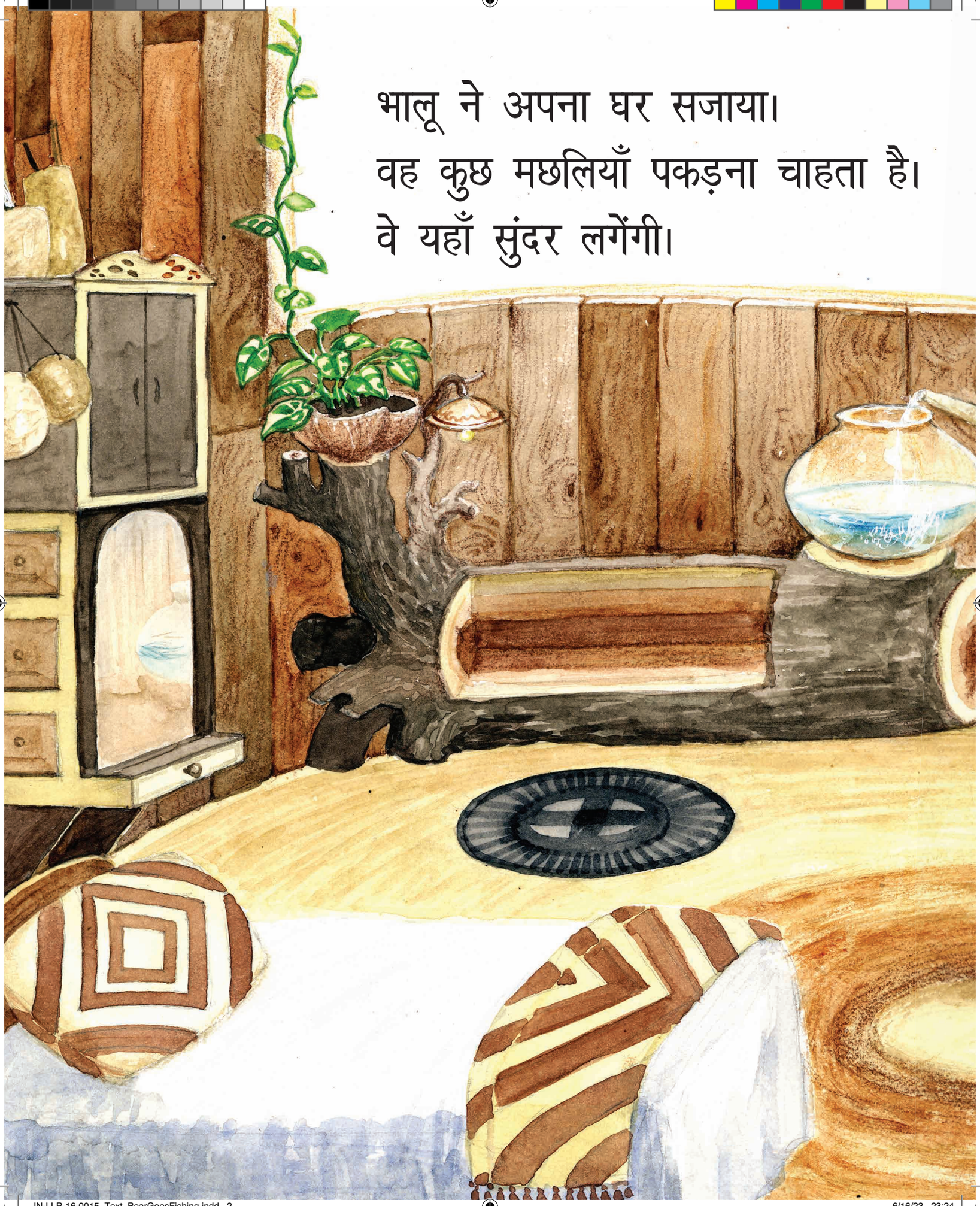

भालू ने अपना घर सजाया।
वह कुछ मछलियाँ पकड़ना चाहता है।
वे यहाँ सुंदर लगेंगी।

IN-LLP-16-0015_Text_BearGoesFishing.indd 3 6/16/23 23:24

IN-LLP-16-0015_Text_BearGoesFishing.indd 4 6/16/23 23:24

उसने मछली पकड़ने का काँटा उठाया। चल पड़ा तालाब पर मछलियाँ पकड़ने।

काँटे में चारा लगाया।

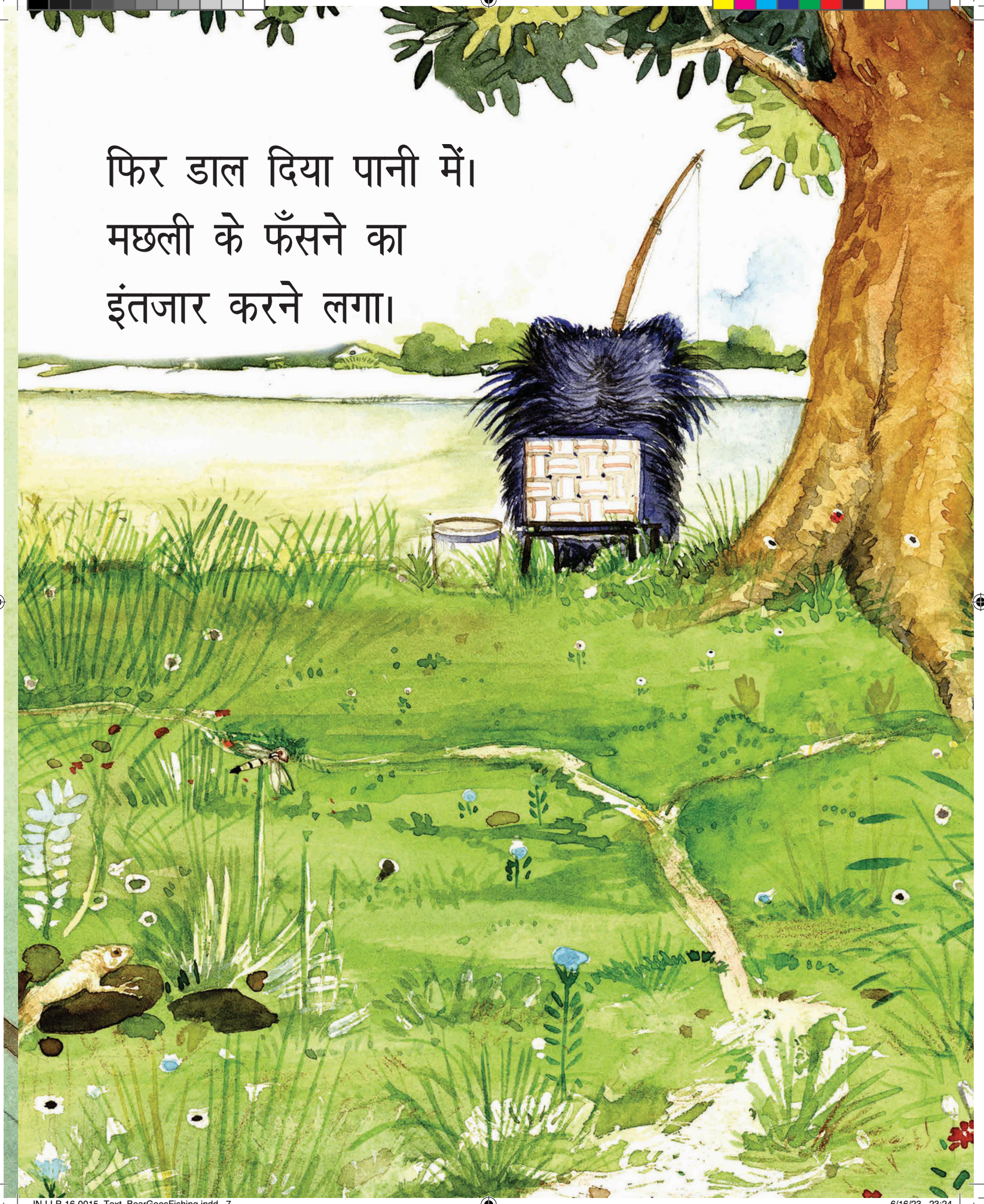
फिर डाल दिया पानी में।
मछली के फँसने का
इंतजार करने लगा।

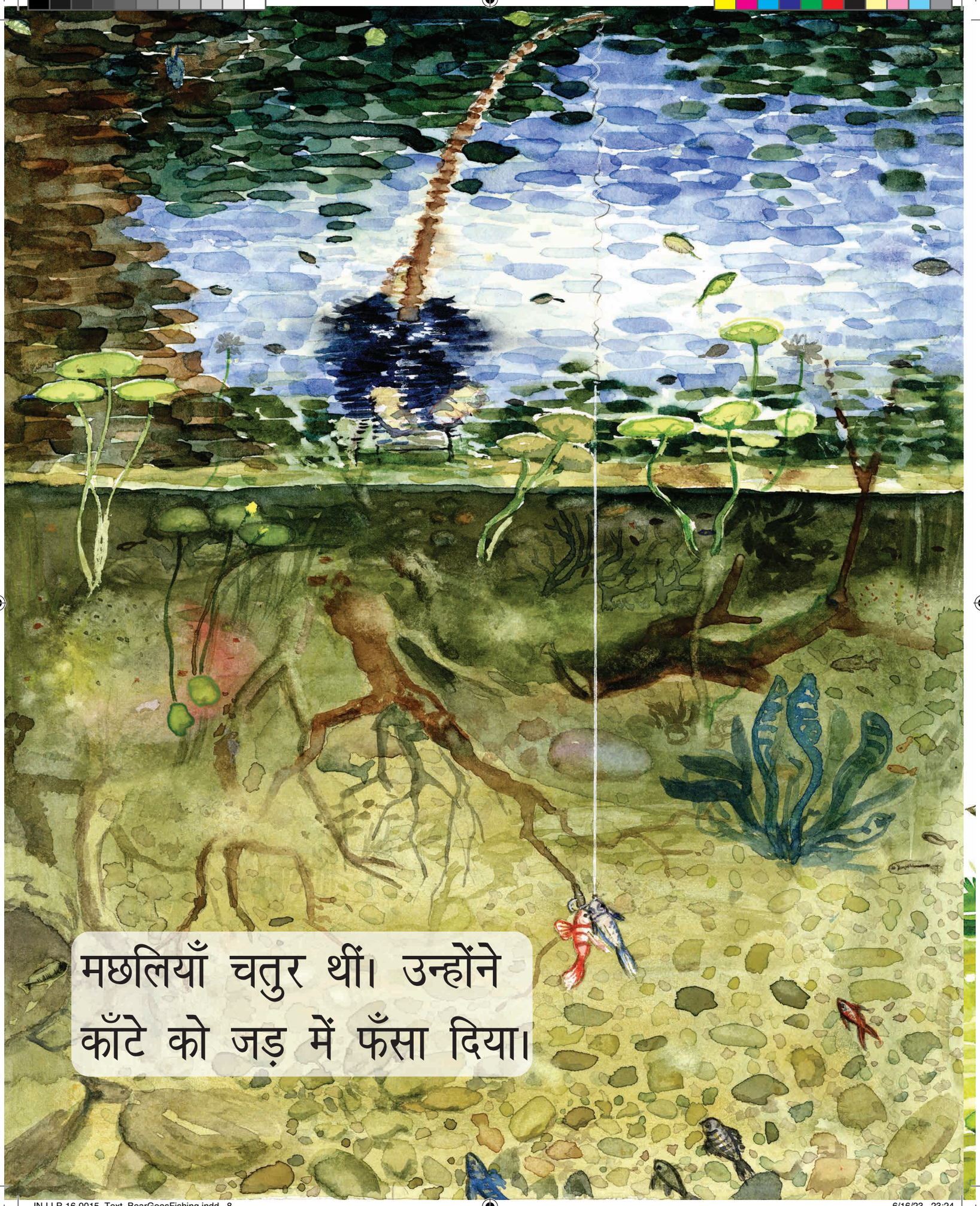

IN-LLP-16-0015_Text_BearGoesFishing.indd 8 6/16/23 23:24

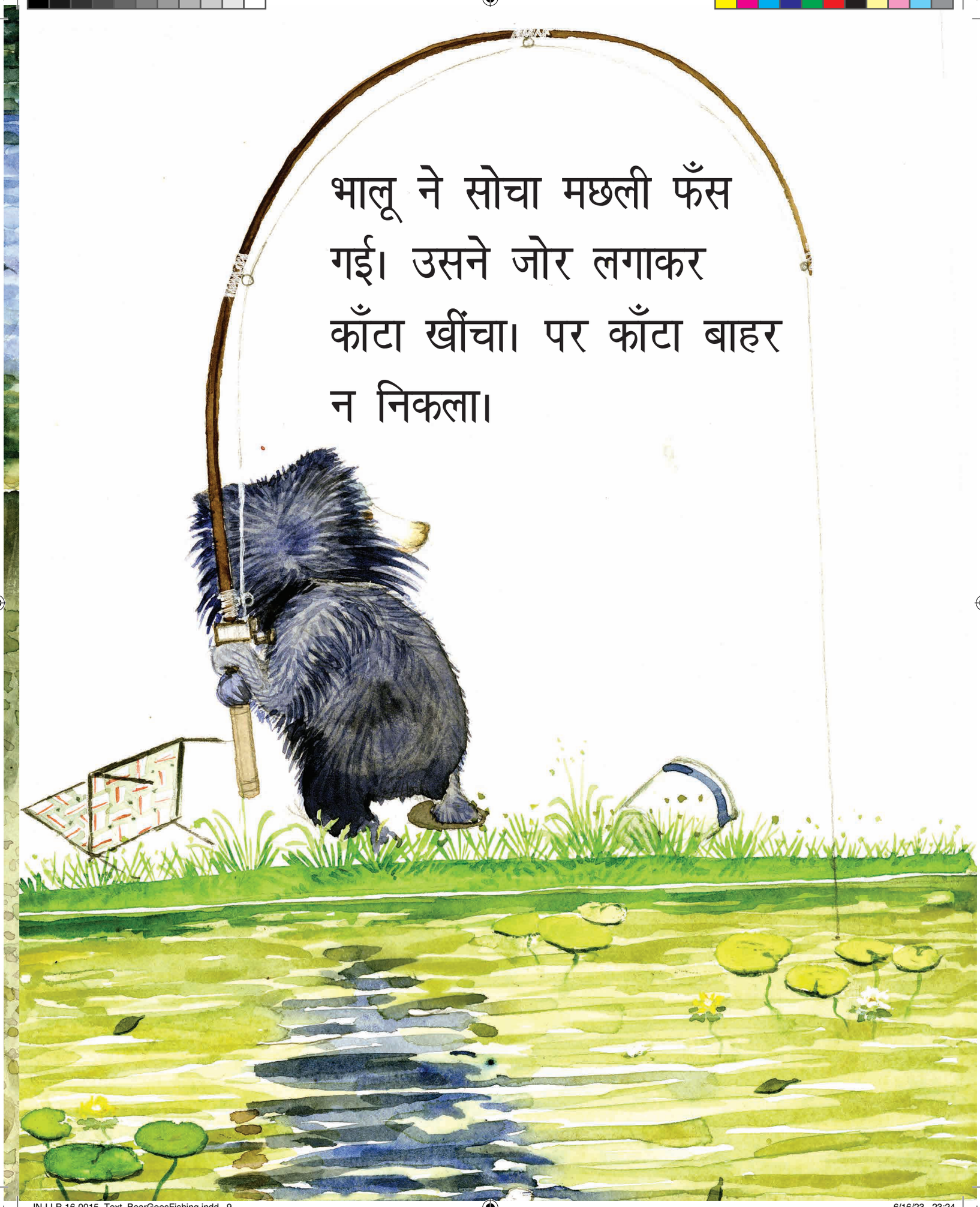

भालू ने सोचा मछली फँस गई। उसने जोर लगाकर काँटा खींचा। पर काँटा बाहर न निकला।

IN-LLP-16-0015_Text_BearGoesFishing.indd 9 6/16/23 23:24

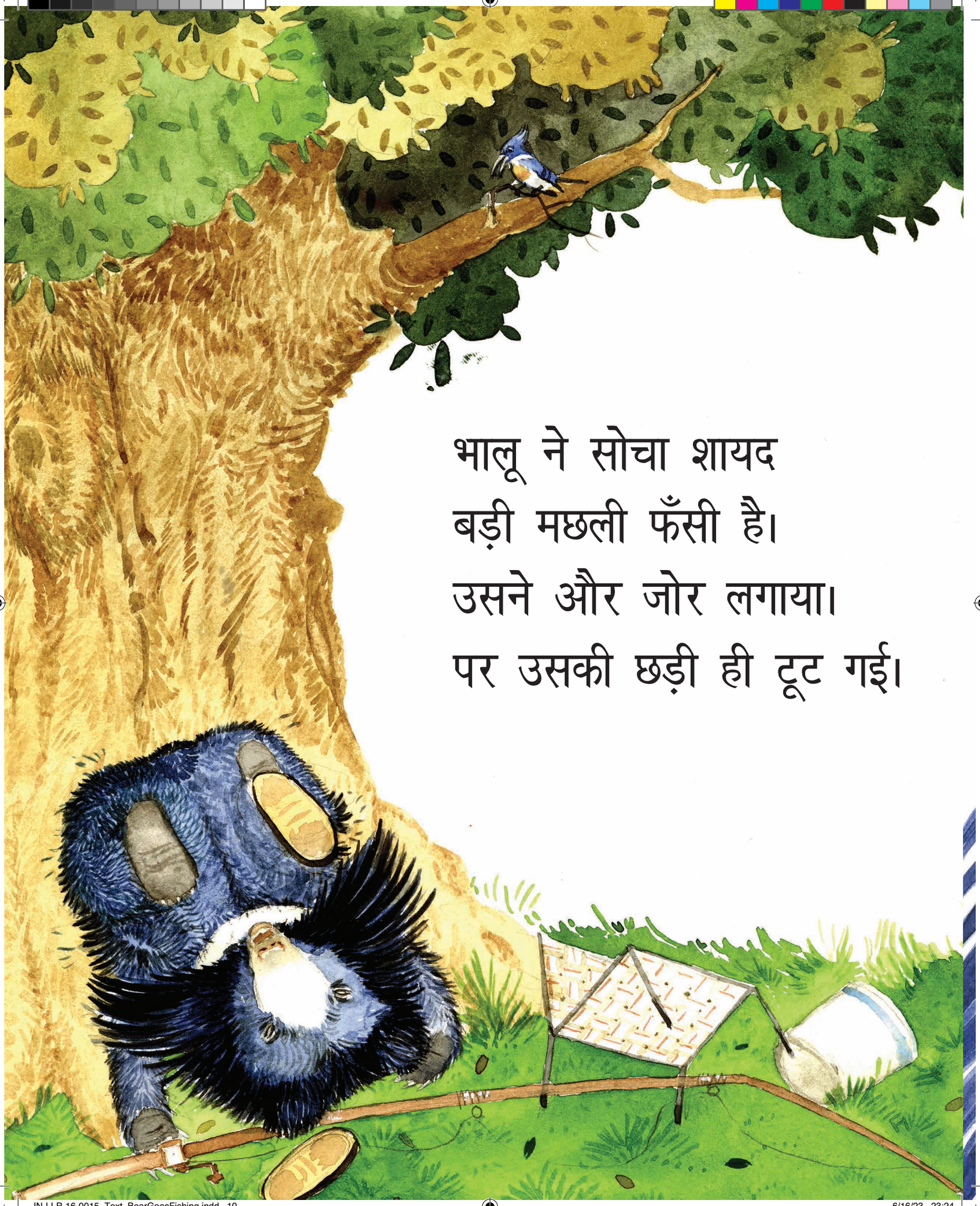

भालू ने सोचा शायद
बड़ी मछली फँसी है।
उसने और जोर लगाया।
पर उसकी छड़ी ही टूट गई।

IN-LLP-16-0015_Text_BearGoesFishing.indd 10 6/16/23 23:24

भालू को गुस्सा आ गया।

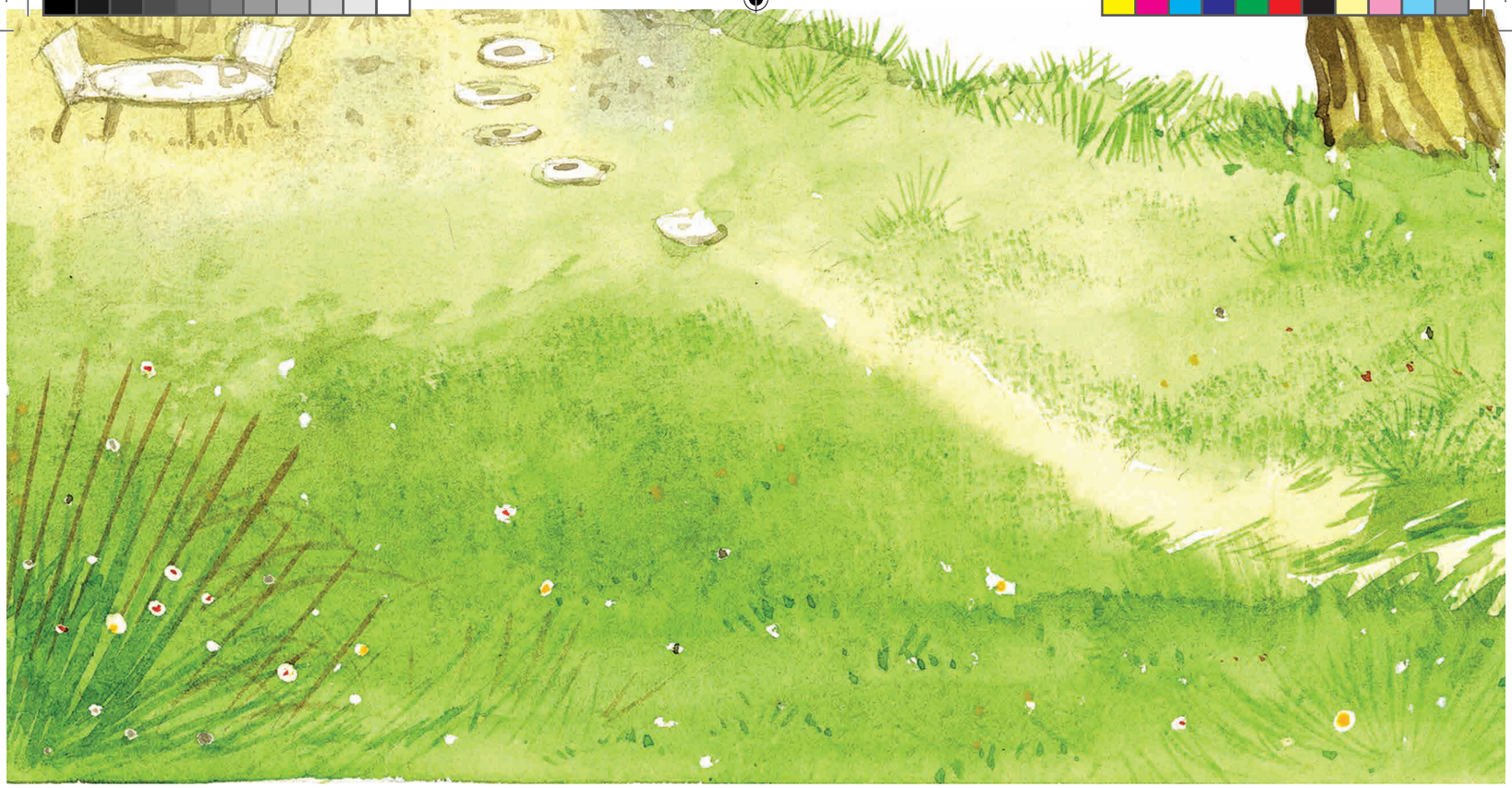

वह अपने घर गया।
जाल लेकर वापस आया।

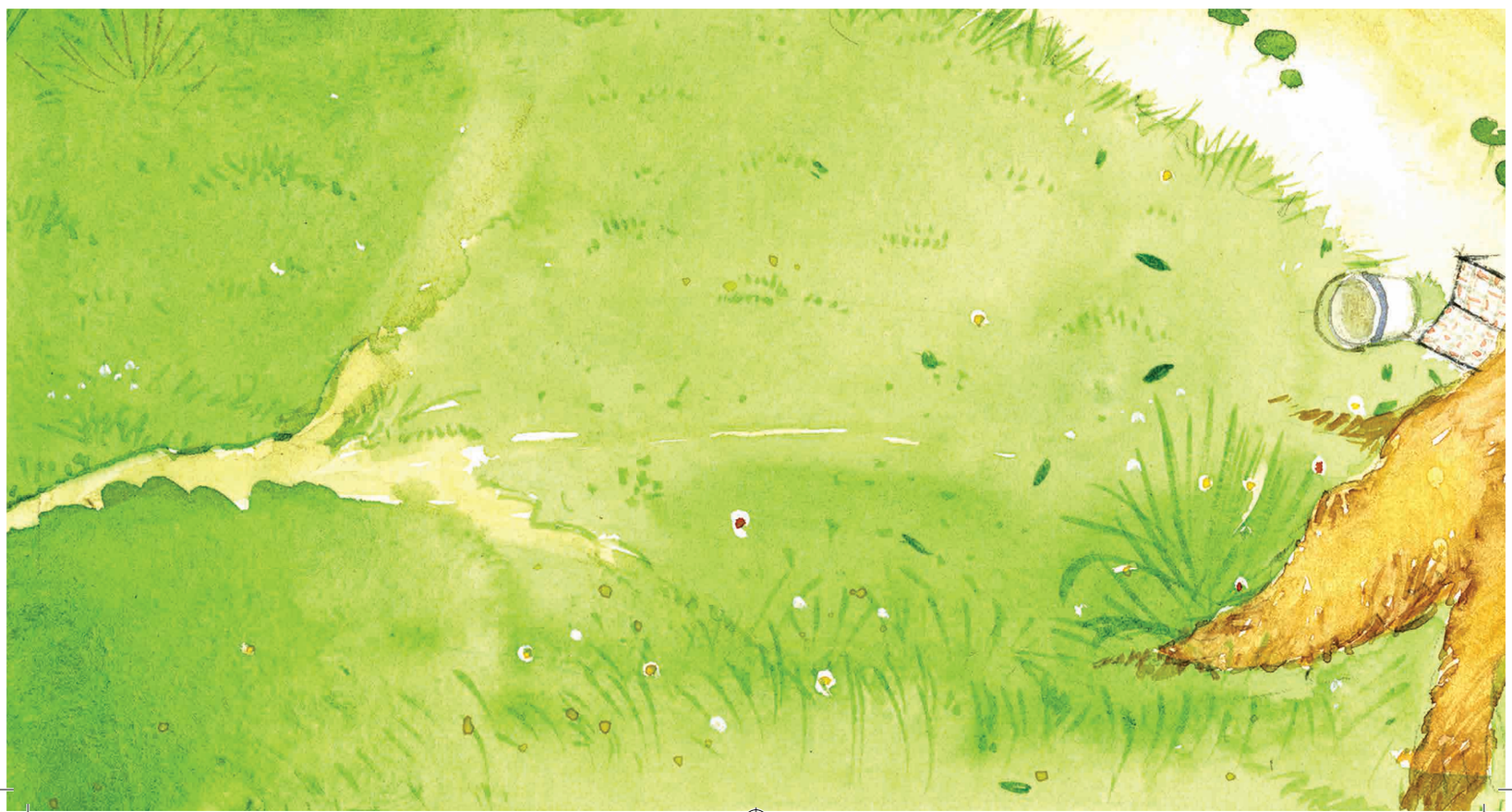

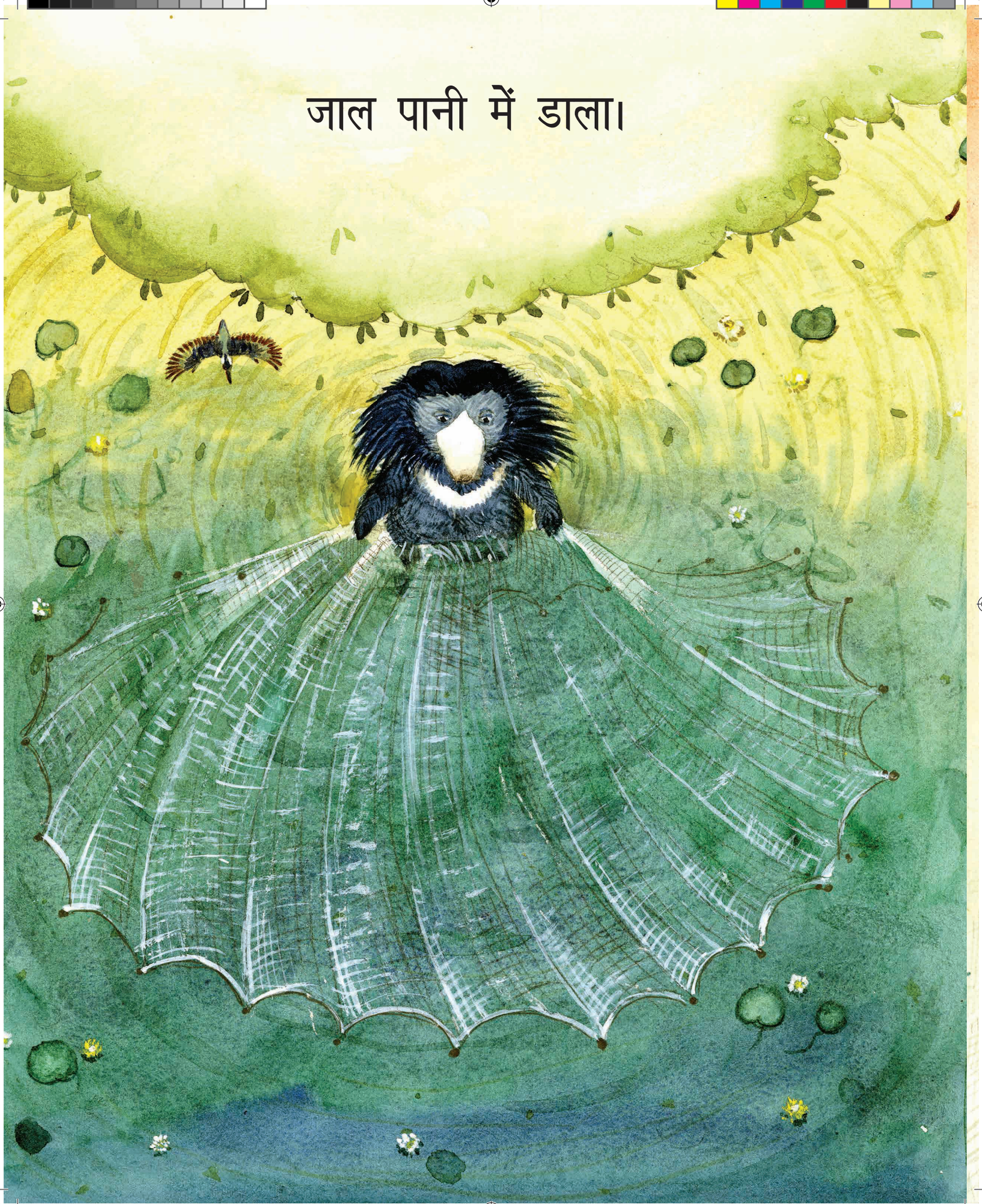
जाल पानी में डाला।

मछलियाँ चतुर थीं।
उन्होंने जाल ही काट दिया।

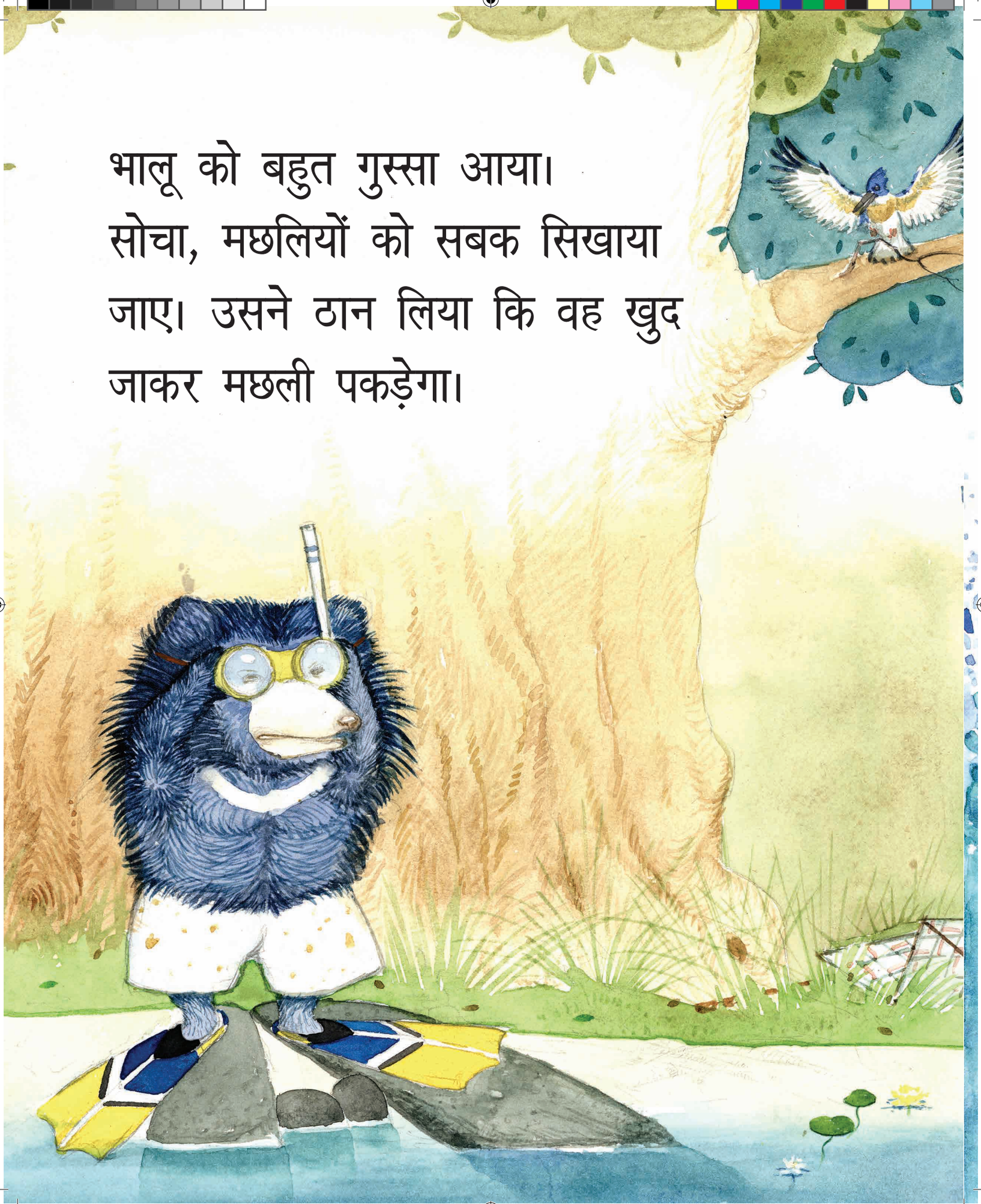

भालू को बहुत गुस्सा आया।
सोचा, मछलियों को सबक सिखाया
जाए। उसने ठान लिया कि वह खुद
जाकर मछली पकड़ेगा।

IN-LLP-16-0015_Text_BearGoesFishing.indd 16 6/16/23 23:24

और कूद पड़ा तालाब में।

अंदर बहुत सुंदर मछलियाँ थीं।
वे भालू के चारों ओर तैरने
लगीं। साथ खेलने लगीं।

IN-LLP-16-0015_Text_BearGoesFishing.indd 18 6/16/23 23:24

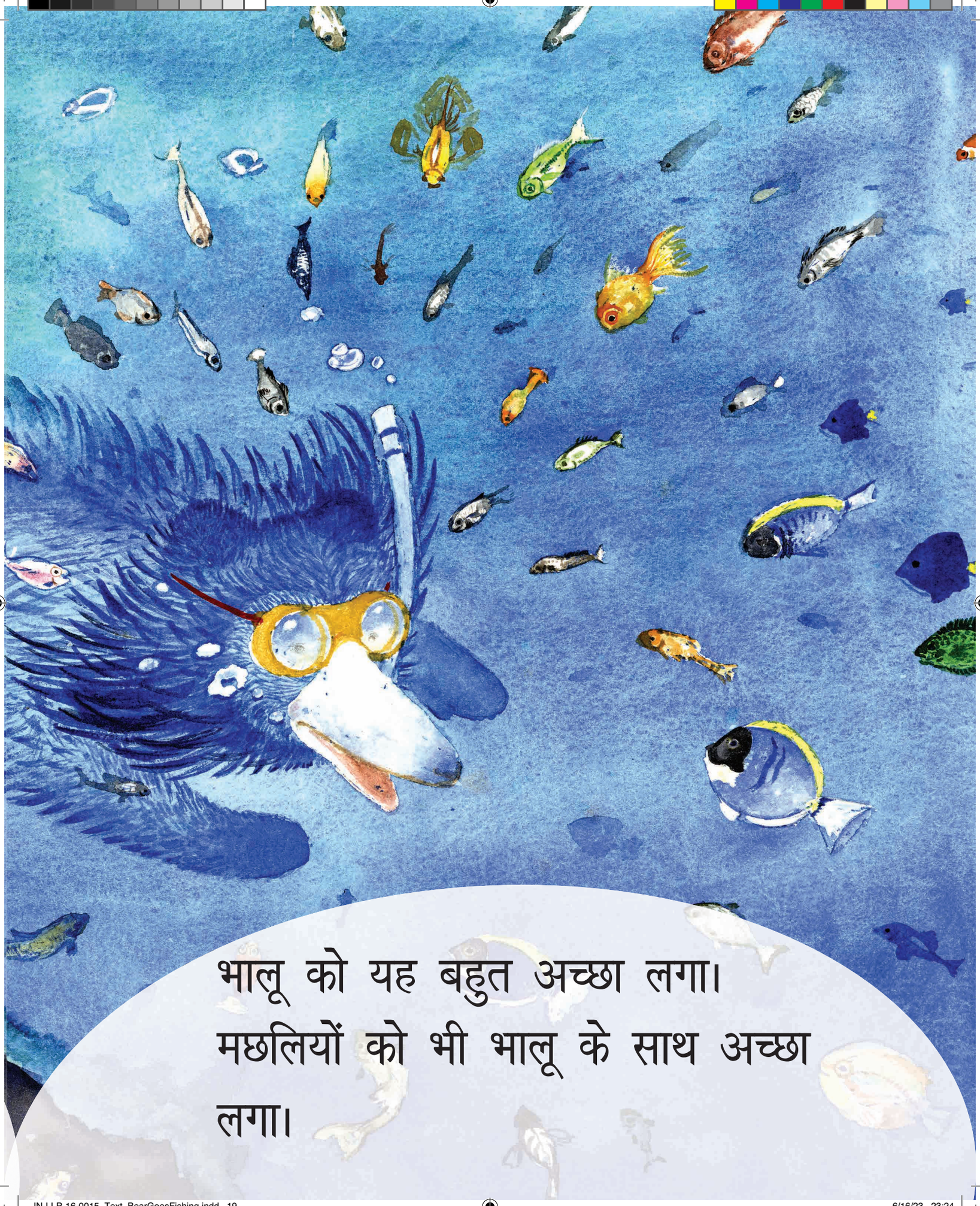

भालू को यह बहुत अच्छा लगा।
मछलियों को भी भालू के साथ अच्छा लगा।

भालू अब बहुत खुश था। उसने तय किया कि अब वह मछलियाँ नहीं पकड़ेगा। जब भी मन होगा, इनके साथ खेलेगा।